मिशन शिक्षण संवाद का मासिक संकलन

शिक्षा का उत्थान

अंक-५७ वर्ष-२०२५

माह दिसम्बर

शिक्षक का सम्मान

शिक्षण संवाद

विश्व विकलांग दिवस

३ दिसम्बर

मिशन

शिक्षण

संवाद

शिक्षण संवाद

मिशन शिक्षण संवाद का मासिक संकलन

वर्ष-२०२५
अंक-५७

माह- दिसम्बर २०२५

प्रधान सम्पादक

श्री विमल कुमार

प्रबन्ध सम्पादक

अवनीन्द्र जादौन, प्रांजल सक्सेना

सम्पादक

आनन्द मिश्रा, सुश्री ज्योति कुमारी, बबलू सोनी

सह सम्पादक

सुशांत सक्सेना, शंखधर द्विवेदी,

छायांकन

वीरेन्द्र परनामी

तकनीकी सहयोगी

जितेन्द्र कुमार, अनिल मौर्य, विकास शर्मा

विशेष सहयोगी

विकास मिश्रा, अफ़ज़ाल अहमद, साकेत बिहारी शुक्ला

आओ हाथ से हाथ मिलाएं
बेसिक शिक्षा का मान बढ़ाएं

मिशन
शिक्षण
संवाद

व्हाट्सएप एवं सम्पर्क नं0
9458278429

ई मेल :
shikshansamvad@gmail.com

वेबसाइट :
www.missionshikshansamvad.com

शुभकामना सन्देश

यह अति प्रसन्नता का विषय है कि बेसिक शिक्षा विभाग के शिक्षकों द्वारा छात्रों, शिक्षकों एवं समाज के लिए उपयोगी समूह मिशन शिक्षण संवाद परिवार द्वारा मासिक पत्रिका का नवीन अंक प्रकाशित किया जा रहा है।

इस पत्रिका के माध्यम से शिक्षकों के विचारों, कविताओं, नवाचारों, गतिविधियों, कस्तूरबा विद्यालयों एवं महापुरुषों के विषय में उपयोगी जानकारी मिलती है।

मिशन शिक्षण संवाद के शिक्षकों द्वारा निस्वार्थ भाव से उत्तर प्रदेश ही नहीं अपितु अन्य राज्यों में भी शिक्षक, समाज एवं छात्र हित में किए जा रहे कार्यों को इस पत्रिका के माध्यम से सभी परिचित होते हैं।

मिशन शिक्षण संवाद द्वारा संपादित की जा रही यह पत्रिका सभी के लिए अत्यंत उपयोगी है। मैं इस पत्रिका के संपादक मंडल एवं सभी कर्मठ सहयोगियों के लिए बधाई प्रेषित करता हूँ।

आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास के साथ यही प्रार्थना करता हूँ कि आपका मिशन शिक्षण परिवार इसी प्रकार प्रगति करते हुए उत्तर प्रदेश ही नहीं सम्पूर्ण भारत में एक परिवार के निर्माण कर सकारात्मक दिशा में अग्रसर रहेंगे।

हमारा सहयोग आपके साथ हमेशा रहेगा।

अनंत शुभ कामनाओं के साथ

(नेत्रपाल सिंह)
खण्ड शिक्षा अधिकारी
नगर क्षेत्र जनपद एटा

सम्पादकीय

''समय वह शिक्षक है जो हमें हर पल अनुभव और ज्ञान की ओर ले जाता है।'' इसीलिए वर्ष–2025 भी हमें अनुभवों से आत्मबोध तक, आत्मबोध से मानवता तक के लिए सतत आत्मचिंतन एवं आत्मबोध के साथ प्रेरित करते हुए आगे बढ़ाता गया। वर्ष–2025 अब हमारे अनुभवों की संपदा बनकर विदा ले रहा है। यह वर्ष हमारे लिए मात्र समय की एक इकाई नहीं रहा, बल्कि हमारे सामाजिक, शैक्षिक और मानवीय चिंतन की एक महत्वपूर्ण प्रयोगशाला भी रहा है, क्योंकि इस वर्ष ने हमें यह सिखाया कि तकनीकी प्रगति और भौतिक उपलब्धियों के बीच यदि सबसे अधिक कुछ उपेक्षित हुआ है, तो वह है ''मनुष्य का मनुष्य होना।'' यही कारण है कि जैसे ही प्रत्यक्ष लालच में कोई बाधा की अनुभूति होती है। मानवीय कल्याण, मानवता, देशभक्ति, राष्ट्र प्रथम जैसी भावनाओं को बिखरते देर नहीं लगती है। इसीलिए शिक्षण संवाद के लिए भी वर्ष–2025 आत्ममंथन का वर्ष रहा है। हमने देखा कि शिक्षा और शिक्षित जैसे शब्द भी लोभ–लालच के चक्रव्यूह में फंस कर कब मानवीय कल्याण और मानवीय समानता के लक्ष्य को भूलकर भय, अविश्वास और तनाव का कारण बन गये, पता ही न चला। जबकि शिक्षा और शिक्षित होने का अर्थ आपसी संवेदना, संवाद, सहयोग और विश्वास की जीवंत प्रक्रिया है। इसीलिए ''जब तक शिक्षा मनुष्य को मनुष्य से जोड़ने का कार्य नहीं करती, तब तक वह समाज को दिशा देने में अपूर्ण रहती है।''

आज विश्व अविश्वास, असहिष्णुता, वैचारिक ध्रुवीकरण और संवेदनहीनता जैसी विविध चुनौतियों से जूझ रहा है। ऐसे समय में यह स्पष्ट होता जा रहा है कि विश्व का वास्तविक विकास केवल आर्थिक या भौतिक नहीं, बल्कि ''मानवीय कल्याण के प्राथमिक दृष्टिकोण से ही संभव है।'' जो मिशन शिक्षण संवाद की मूल चेतना में सदैव से रहा है। मिशन परिवार का

संकल्प ''मनुष्य बनकर जीवन जीने का तथा मनुष्यों के लिए जीवन जीना सीखने और सिखाने का है।''

लेकिन यह संभव तभी है जब हम आपसी सामाजिक विश्वास को पुनर्स्थापित करें, सहयोग को प्रतिस्पर्धा से ऊपर रखें और सद्भाव को संवाद की भाषा बनाएँ। मिशन शिक्षण संवाद का यह मानना है कि जब शिक्षक, विद्यार्थी, अभिभावक, समाज, शासन और सरकार मिलकर एक–दूसरे के अनुभवों से सीखते हैं, एक दूसरे पर विश्वास करते हैं, एक–दूसरे के सहयोगी बनते हैं, तभी शिक्षा एक विश्व परिवार का रूप लेती है। क्योंकि "वसुधैव कुटुम्बकम" कोई नारा मात्र नहीं, बल्कि व्यवहार में उतरने योग्य जीवन–दृष्टि है।

दिसम्बर–2025 का यह क्षण हमें ठहरकर देखने और आत्मचिंतन का अवसर देता है कि हम कहाँ पहुँचे और अब आगे किस दिशा में जाना है। मिशन शिक्षण संवाद पूरे विश्वास के साथ यह कहता है कि यदि ''हमारी शिक्षा मनुष्य को अधिक संवेदनशील, सहयोगी और जिम्मेदार बनाती है, तो वही शिक्षा समाज और विश्व के वास्तविक विकास की आधारशिला बनेगी।''

आइए! हम सब मिलकर मानवता को शिक्षा का केन्द्र और शिक्षा को मानवीय कल्याण का माध्यम बनाएँ।

जयहिन्द! वन्दे मातरम

संपादक
मिशन शिक्षण संवाद

अनुक्रमणिका

विषय वस्तु	पृष्ठ सं०
मिशन गीत	8
टी.एल.एम.संसार	9
विचार शक्ति	10
बात महिला शिक्षकों की	11
मिशन हलचल	12-13
सद विचार	14-16
प्रेरक–प्रसंग	17-18
कविता	19
दिवस विशेष	20-21
नवाचार	22-23
शैक्षिक तकनीकी	24-25
कस्तूरबा विद्यालय विशेष	26-27
खेल जगत	28-29
योग विशेष	30

मिशन गीत

हम सिपाही है मिशन के इतिहास नया हम रचते हैं
लेकर प्रेरणा नित मिशन से हम तो आगे बढ़ते हैं...2

शिक्षा और शिक्षक के उत्थान में हम निरंतर कार्य करते हैं
मेहनत और विश्वास से हम नित नये आयाम रचते हैं

प्रेम, प्रोत्साहन और विश्वास से हम मानव कल्याण करते हैं
बिना किसी लोग लालच के हम मिलकर कार्य करते हैं

हम सिपाही है मिशन के इतिहास नया हम रचते हैं
लेकर प्रेरणा नित्य मिशन से हम तो आगे बढ़ते हैं...2

ईमानदारी हमें है प्यारी संस्कार बच्चों में यही गढ़ते हैं
शिक्षक की गरिमा बढ़े समाज में, हम सकारात्मक प्रयास करते हैं

आलोचनाओं से नहीं घबराते विद्यालय परिवेश सजाते हैं
बच्चों को मिले गुणवत्तापूर्ण शिक्षा हम ज्ञान गंगा अविरल बहाते हैं

हम सिपाही है मिशन के, इतिहास नया हम रचते हैं
लेकर प्रेरणा नित मिशन से हम तो आगे बढ़ते हैं...2

स्वरचित
मृदुला वर्मा (स०अ०)
प्राथमिक विद्यालय अमरौधा प्रथम
ब्लॉक अमरौधा
जनपद कानपुर देहात

पहाड़े

टी.एल. एम. का नाम– पहाड़े

विषय– गणित

कक्षा– प्राथमिक स्तर

प्रयुक्त सामग्री–
पुरानी पानी की बोतल,
रंगीन एवं सफेद कागज,
स्केच पेन, फेविकोल आदि।

लर्निंग आउटकम–
विद्यार्थी 2 से 20 तक पहाड़े याद करने में सक्षम होंगे।

जितेन्द्र कुमार (स०अ०)
पी० एम० श्री प्रा० वि० धनौरा सिल्वर नगर– 1
विकास क्षेत्र व जनपद– बागपत

जमीन और कृषि

आज गांव की समस्या समाप्त होने वाली नहीं है। बच्चे पढ़ाई करते हैं विद्यालय में और उनके भविष्य को सुधारने के लिए माता–पिता कार्य करते हैं। पिता को कार्य करने के लिए बाहर भी जाना पड़ता है। अधिकांश समय बाहर ही जीवन यापन करते हैं और माता खेती के कार्य करती और अन्य लोगों का सहयोग लेती और करती है। बच्चों के भरण–पोषण की ज़िम्मेदारी माता पर रहती है और बच्चे घर की रखवाली, छोटे बच्चों की देखभाल, जानवरों की देखभाल और थोड़ा जब बच्चे बड़े हो जाते हैं तो कृषि कार्य में भी संलग्न रहते हैं। विद्यालय के उपरांत उन्हें घर के बहुत से कार्य में मजबूरन शामिल होना पड़ता है। यदि वे नवोदय अटल आवासीय इलाहाबाद व अन्य विद्यालय में बाहर चले जाएं तो उनकी जमीन और कृषि कार्य में बाधा उत्पन्न हो जाएगी। परिवार भी समस्या से ग्रसित हो जाएगा।

ऐसी समस्या के कारण जो उनके मनोभाव हैं। उसे शिक्षा से ओर आगे बढ़ाने में सहयोग पूर्ण रूप से प्राप्त करने में बहुत ही कठिनाई होती है। वर्तमान में प्लॉटिंग व्यवस्था में कृषि योग्य जमीन घटती जा रही है और जनसंख्या निरंतर बढ़ रही है। भविष्य में भोजन संकट निश्चित ही आएगा। बहुत सी जमीन है, प्लाट के रूप में परिवर्तित होकर आज खाली पड़ी हैं और किसान अपनी कम होती ज़मीनों में किसी तरह से थोड़ा बहुत अन्न उत्पादन कर पा रहा है। किसान गरीब होता जा रहा है और लोग उसकी ज़मीन खरीद कर परती छोड़ दिए हैं। ऐसी बहुत सारी समस्याएं हैं जिसको सभी सरकारी शिक्षकों को झेलना पड़ रहा है। फिर भी उसमें वह अच्छा करने का प्रयास करता है और सफल भी हो रहा है।

राहुल बरनवाल
उच्च प्राथमिक विद्यालय दुधारा
विकास क्षेत्र–बेलहरकलां
जनपद– संतकबीरनगर

स्वंय की अभिव्यक्ति

अपने परिवार और बच्चों को समय कम दे पाने, स्वयं के लिए समय न निकाल पाने और विभागीय दायित्वों के निर्वहन के चक्कर में अपने (hobbies)शौक और स्वयं की रुचि वाले कार्य करने का समय न मिल पाना, महिला शिक्षिका बहनों में एक कुंठा उत्पन्न करता है, जिसका प्रभाव कहीं न कहीं उनके व्यक्तित्व व जीवन पर नकारात्मक स्वरूप में देखने को मिलता है। प्रत्येक क्षण कोई ज़िम्मेदारियां निभाता हुआ ही नहीं रह सकता। उस व्यक्ति को अपने सर्वोत्तम स्वरूप में अभिव्यक्त होने के लिए पहले कुछ विश्राम, कुछ तैयारी, कुछ मनन और आह्लादित होने की भी आवश्यकता होती है। स्त्रियों के ऐसा कर पाने के लिए उन्हें भी परिवार से सहयोग और स्वयं के लिए समय व अवसर की अपेक्षा होती है। ऐसा नहीं होना चाहिए कि स्त्री होने के नाते उन्हें परिवार के लिए दायित्वों की पूर्ति का माध्यम मान लिया जाए और उन्हें अपने को अभिव्यक्त करने का मौका न मिले और कामकाजी होने के कारण स्थिति और बदतर हो जाए। सभी को अपने जीवन का कुछ समय उन्मुक्त होकर जीने का हक है, ईश्वर ने सभी को अभिरुचियों से सिंचित किया है। तो सभी को (महिला शिक्षकों को भी) थोड़ा खुद के लिए, अपनी अभिरुचियों के लिए जी लेने का समय भी मिलना चाहिए। कहना सिर्फ ये है कि समाज और परिवार में हम सभी एक दूसरे की ज़िम्मेदारी हैं और हम सभी को अपनी इस जिम्मेदारी को समझना चाहिए, निभाना चाहिए और किसी को भी उसका जीवन बोझ न लगने लगे, इसके लिए प्रयास करना चाहिए। कुछ लोग ये अच्छा काम करते भी हैं, तो परिणामस्वरूप उनसे जुड़ी महिलाओं का स्वर्णिम रूप भी समाज के सम्मुख आता है, किन्तु अभी बड़े पैमाने पर ऐसी जागरूकता नहीं देखने को मिलती। अभी और जागरण की आवश्यकता है, स्त्रियों को और अधिक मुखर होने का समय दिया जाए। उन्हें समझा जाए, उन्हें अवसर दिये जाएं और साथ में प्रोत्साहन व सम्मान भी। तब हमारे समाज में, परिवार में स्त्रियाँ गर्व बनकर उभरेंगी, कुंठा से मुक्त होकर नव नूतन सृजन करेंगी और हमारे समाज का और अधिक सुन्दर शृंगार करेंगी!

ईश्वर करें ऐसा हो! मेरी शुभकामनाएँ हैं!

आशा शर्मा
(सहायक अध्यापक)
यू.पी.एस. खड्डा
विकास क्षेत्र–खड्डा, जनपद–कुशीनगर

कुशी नगर वार्षिक बैठक

शिक्षण संवाद

मिशन शिक्षण संवाद जनपद कुशीनगर कोर टीम की वार्षिक समीक्षा बैठक का आयोजन पी० एम० श्री कम्पोजिट स्कूल भटवलिया बनकट रामकोला में किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ जनपद एडमिन मंजू सिंह द्वारा शिक्षा की अधिष्ठात्री देवी माता सरस्वती की प्रतिमा सम्मुख दीप प्रज्ज्वलन एवं पुष्पार्चन कर किया गया। साथ ही आज नेताजी सुभाष चंद्र बोस की जयंती के अवसर पर उनकी प्रतिबिंब तस्वीर पर पुष्पांजलि अर्पित कर देश की आज़ादी में उनके सहयोग और शहादत पर चर्चा करते हुए श्रद्धांजलि अर्पित की गई। साथ ही मिशन शिक्षण संवाद के द्वय आदर्श विवेकानंद जी एवं कलाम साहब को नमन करते हुए श्रद्धा सुमन अर्पित किये गये। बैठक में जनपद के समस्त विकास खण्डों के शिक्षक बहुतायत संख्या में उपस्थित हुए। बैठक का संचालन राज्य अध्यापक पुरस्कार प्राप्त शिक्षक सुनील सर द्वारा किया गया, उनके द्वारा बताया गया की सर्वप्रथम हमें अपनी कोर टीम को मज़बूत बनाना है। प्रत्येक विकास खण्ड में महीने में एक बैठक करके ही हम अपनी टीम को मज़बूत बना सकते हैं। अगर बैठक में सिर्फ 2 ही नए अध्यापक आते हैं तब भी हमको बैठक को सुचारू रूप से संचालित करना है। साथ ही उनके द्वारा ये भी बताया गया कि मिशन शिक्षण संवाद कुशीनगर की टीम ने निर्णय लिया है कि हम लोग जल्द ही अनाथालय में गरीब बच्चों को स्टेशनरी और कंबल वितरण का कार्यक्रम करेंगे। टीम भटवलिया बनकट ने मंजू दीदी को बुके और स्मृति चिन्ह भेंट कर सम्मानित किया। डॉक्टर सूर्य प्रताप सर और मंजू मैम द्वारा बैठक में उपस्थित सभी प्रतिभागियों को मिशन शिक्षण संवाद की तरफ से उपहार प्रदान किए गए। उसके बाद सूर्य प्रताप सर द्वारा बताया गया कि इसी माह लखनऊ की कार्यशाला

में सभी साथी कुशीनगर की प्रशंसा कर रहे थे। यह निश्चित ही सिर्फ मिशन की कोर टीम की बदौलत ही संभव हो पाया है और अगर हम लोगों को दुबारा मौका मिला तो कुशीनगर मिशन शिक्षण परिवार राज्यस्तरीय कार्यशाला के लिए तैयार है। क्योंकि पिछली बार कार्यशाला की यादें अभी भी लोगों के ज़हन में ताज़ा हैं। तत्पश्चात विभिन्न प्रतियोगितात्मक परीक्षाओं में परीक्षार्थियों का विवरण लिया गया। प्रत्येक ब्लॉक के एडमिन लोगों के द्वारा अपने अपने ब्लॉक की कार्ययोजना के बारे में जानकारी ली गई। साथ ही साथ सर्वसहमति से निर्णय लिया गया कि अगली मासिक बैठक खड्डा ब्लॉक में होगी। इसके बाद गोरखपुर से मिशन शिक्षण संवाद की टीम से विक्रम सर आए और सर ने अपने विचार प्रस्तुत किए विचार प्रस्तुति में अपने अनुभवों को शेयर किये और अपनी कार्य योजना के बारे में बताया। रामबीर सर ने अपने शायराना अंदाज से लोगों का मन मोह लिया। इसके साथ साथ उन्होंने ये भी बताया कि सुकरौली की खंड शिक्षा अधिकारी श्रीमती जया मैडम का भी पूरा सहयोग मिल रहा है। उमेश सर और मुकेश सर के द्वारा मिशन के ऊपर एक गीत प्रस्तुत किया गया जिसे सुनकर सबलोग झूम उठे और इसके बाद डॉ० राजेश सर द्वारा अपनी कुछ निजी परेशानियों को साझा किया गया। जिसके बाद मिशन की टीम द्वारा निर्णय लिया गया कि एक दिन पूरी टीम सक्षम अधिकारी के पास इस समस्या के समाधान के लिए चलेगी और अपनी बात रखेगी। इसके पश्चात कार्यक्रम का समापन हुआ और सबने लज़ीज़ व्यंजन का भरपूर आनंद लिया और सबने स्वाद की बहुत तारीफ़ की। उमेश यादव सर और मुकेश गोंड सर द्वारा मिशन का गीत गाकर पूरे हाल को मिशन मय कर दिया गया और अवनीश सिंह सर द्वारा मिशन पर स्वरचित कविता की बहुत ही सुंदर अन्दाज में प्रस्तुति हुई।

आज की मासिक समीक्षा बैठक में मोलई प्रजापति, दिनेश सिंह, रामवीर सिंह, मुन्ना सिंह, राहुल कुमार, बिपिन कुमार सिंह, विनय कुमार सिंह, अरविंद कुमार गुप्ता, श्रवण कुमार, डॉ० राजेश कुमार गुप्ता, डॉ० रश्मि जायसवाल, नीतू कौर, उमेश कुमार यादव, भानु प्रताप, मिथिलेश कुमार, रवि भूषण भारती, उषा सिंह, गीतांजलि, क्षिप्रा दूबे, शम्भू सिंह, दीपक सिंह, अजय कुमार गुप्ता, मुकेश गोंड, डॉ० महेश पाल, अमित कुमार, अवनीश सिंह, उमेश यादव, बलराम चौहान, कमलेश प्रजापति, दीवान सिंह, सोहन राम सहित अनगिनत साथी उपस्थित रहे।

चौधरी चरण सिंह

शिक्षण संवाद

चौधरी चरण सिंह जी भारत के महान किसान नेता, स्वतंत्रता सेनानी और देश के पूर्व प्रधानमंत्री थे, जिन्होंने अपना संपूर्ण जीवन किसानों, ग्रामीण समाज और सामाजिक न्याय के लिए समर्पित कर दिया। वे जमींदारी प्रथा के घोर विरोधी थे और किसानों को शोषण से मुक्त कराने के लिए अनेक ऐतिहासिक भूमि सुधार कानून लागू किए। उनका विश्वास था कि भारत की वास्तविक शक्ति गाँवों और किसानों में निहित है, इसलिए उन्होंने कृषि को राष्ट्र की अर्थव्यवस्था की रीढ़ माना। सादगी, ईमानदारी और दृढ़ सिद्धांतों के प्रतीक चौधरी चरण सिंह जी ने राजनीति को सेवा का माध्यम बनाया और सदैव किसान, श्रमिक तथा वंचित वर्गों के हितों की रक्षा के लिए संघर्ष किया।

चौधरी चरण सिंह का जन्म 23 दिसम्बर,1902 को उत्तर प्रदेश के मेरठ जिले के नूरपुर ग्राम में एक मध्यम वर्गीय कृषक परिवार में हुआ था। इनका परिवार जाट पृष्ठभूमि वाला था। इनके पुरखे महाराजा नाहर सिंह ने 1887 की प्रथम क्रान्ति में विशेष योगदान दिया था। महाराजा नाहर सिंह वल्लभगढ़ के निवासी थे, जो कि वर्तमान में हरियाणा में आता है। महाराजा नाहर सिंह को दिल्ली के चाँदनी चौक में ब्रिटिश हुकूमत ने फाँसी पर चढ़ा दिया था। तब अंग्रेजों के खिलाफ़ क्रान्ति की ज्वाला को अक्षुण्ण बनाए रखने के लिए महाराजा नाहर सिंह के समर्थक और चौधरी चरण सिंह के दादा जी उत्तर प्रदेश के

बुलंदशहर जिले के पूर्ववर्ती क्षेत्र में निष्क्रमण कर गए। चौधरी चरण सिंह भारत के पाँचवें प्रधानमंत्री थे। जिन्होंने 28 जुलाई 1979 से 14 जनवरी 1980 तक कार्यभार संभाला और वे किसानों के प्रबल नेता के रूप में जाने जाते थे। जिन्होंने अपना पूरा जीवन भारतीयता और ग्रामीण उत्थान के लिए समर्पित किया। उन्हें 2024 में मरणोपरांत ''भारत रत्न'' से सम्मानित किया गया है।

शिक्षा संबंधी विचार –

चौधरी चरण सिंह जी के शिक्षा संबंधी विचार उनकी किसान–केंद्रित सोच, राष्ट्रवाद और सामाजिक यथार्थ से गहराई से जुड़े हुए थे। वे शिक्षा को केवल बौद्धिक विकास का साधन नहीं, बल्कि सामाजिक परिवर्तन, आर्थिक आत्मनिर्भरता और चरित्र निर्माण का माध्यम मानते थे। उनके विचार आज भी भारतीय शिक्षा व्यवस्था के लिए अत्यंत प्रासंगिक हैं।

1. शिक्षा का उद्देश्य

चौधरी चरण सिंह जी के अनुसार शिक्षा का मूल उद्देश्य व्यक्ति को जीवनोपयोगी बनाना होना चाहिए। वे मानते थे कि ऐसी शिक्षा, जो पढ़े–लिखे युवाओं को बेरोजगार बना दे, समाज के लिए हानिकारक है। शिक्षा का लक्ष्य ऐसा नागरिक तैयार करना होना चाहिए जो स्वावलंबी, परिश्रमी, नैतिक और समाज के प्रति उत्तरदायी हो।

2. ग्रामीण और कृषि–आधारित शिक्षा

चरण सिंह जी का दृढ़ विश्वास था कि भारत की आत्मा गाँवों में बसती है, इसलिए शिक्षा व्यवस्था को ग्रामीण जीवन, कृषि, पशुपालन, कुटीर उद्योग और हस्तशिल्प से जोड़ना चाहिए। वे चाहते थे कि विद्यालयों और महाविद्यालयों में छात्रों को कृषि विज्ञान, आधुनिक खेती की तकनीक, सिंचाई, बीज, खाद और ग्रामीण अर्थव्यवस्था का व्यावहारिक ज्ञान दिया जाए। इससे गाँवों में रोजगार बढ़ेगा और शहरों की ओर होने वाला पलायन रुकेगा।

3. श्रम की प्रतिष्ठा और व्यावहारिक शिक्षा

चौधरी चरण सिंह जी श्रम को शिक्षा का अभिन्न अंग मानते थे। उनका विचार था कि श्रम और शिक्षा को अलग करना एक बड़ी भूल है। वे ऐसी शिक्षा के समर्थक थे जिसमें विद्यार्थी पढ़ाई के साथ–साथ शारीरिक श्रम, उत्पादन कार्य और तकनीकी प्रशिक्षण प्राप्त करें। इससे विद्यार्थियों में श्रम के प्रति सम्मान, आत्मविश्वास और आत्मनिर्भरता विकसित होती है।

4. मातृभाषा में शिक्षा

वे मातृभाषा में शिक्षा के प्रबल समर्थक थे। उनका मानना था कि विदेशी भाषा में दी

गई शिक्षा न तो मौलिक चिंतन विकसित कर पाती है और न ही व्यापक जनसमूह तक पहुँच पाती है। मातृभाषा में शिक्षा से छात्रों की समझ गहरी होती है, रचनात्मकता बढ़ती है और वे अपने समाज व संस्कृति से जुड़े रहते हैं।

5. नैतिक और चरित्र निर्माण पर बल

चौधरी चरण सिंह जी के अनुसार शिक्षा केवल ज्ञान अर्जन नहीं, बल्कि चरित्र निर्माण की प्रक्रिया है। वे ईमानदारी, सादगी, अनुशासन, देशभक्ति और सामाजिक न्याय जैसे मूल्यों को शिक्षा का अनिवार्य अंग मानते थे। उनका विश्वास था कि नैतिक मूल्यों के बिना शिक्षा समाज को सही दिशा नहीं दे सकती।

6. पाश्चात्य शिक्षा प्रणाली की आलोचना

उन्होंने भारत में लागू पाश्चात्य शिक्षा प्रणाली की आलोचना की, क्योंकि वह भारतीय सामाजिक संरचना और ग्रामीण अर्थव्यवस्था से मेल नहीं खाती थी। उनके अनुसार यह प्रणाली क्लर्क और नौकरी चाहने वाले तैयार करती है, न कि उत्पादन करने वाले और समाज को दिशा देने वाले नागरिक।

7. शिक्षा और राष्ट्र निर्माण

चौधरी चरण सिंह जी शिक्षा को राष्ट्र निर्माण का सशक्त आधार मानते थे। वे चाहते थे कि शिक्षा से ऐसे नागरिक निकलें जो देश की आर्थिक प्रगति में योगदान दें, लोकतांत्रिक मूल्यों को समझें और किसान, श्रमिक तथा वंचित वर्गों के हितों की रक्षा करें।

निष्कर्ष –

इस प्रकार चौधरी चरण सिंह जी के शिक्षा संबंधी विचार स्वदेशी, व्यावहारिक, नैतिक और ग्रामीण भारत के सशक्तिकरण पर आधारित थे। उनकी शिक्षा–दृष्टि का अंतिम लक्ष्य था आत्मनिर्भर किसान, सशक्त गाँव और मजबूत राष्ट्र। आज के समय में उनकी यह सोच भारतीय शिक्षा नीति को अधिक जनोन्मुखी और रोजगारपरक बनाने के लिए अत्यंत प्रेरणादायक है।

रविन्द्र कुमार पटेल (स. अ.)
पी.एम.श्री उच्च प्राथमिक विद्यालय झौआ
वि.ख. – औराई, जनपद – भदोही

अटल बिहारी वाजपेई जी

शिक्षण संवाद

अटल बिहारी वाजपेयी जी का व्यक्तित्व जितना विराट था, उनके जीवन के प्रसंग उतने ही सरल और सीख देने वाले थे। यहाँ उनके जीवन से जुड़े कुछ प्रेरक प्रसंग प्रस्तुत हैं जो उनके सिद्धांतों, हाजिरजवाबी और मानवीय संवेदनाओं को दर्शाते हैं।

1. सिद्धांत और नैतिकता:– 'हारे हुए का साथ'

एक बार ग्वालियर में छात्र राजनीति के दौरान अटल जी के एक मित्र चुनाव हार गए। हार के बाद सबने उस मित्र का साथ छोड़ दिया, लेकिन अटल जी उनके साथ डटे रहे। जब उनसे पूछा गया कि आप एक हारे हुए व्यक्ति के साथ क्यों हैं, तो उन्होंने मुस्कुराते हुए कहा–

'मैदान में जो जीतता है, उसके साथ तो पूरी दुनिया होती है, लेकिन जिसे हार मिली है, उसे एक सच्चे दोस्त के सहारे की सबसे ज्यादा जरूरत होती है।'

यह प्रसंग सिखाता है कि सफलता से ज्यादा महत्वपूर्ण व्यक्ति और उसके साथ खड़े रहना है।

2. अद्‌भुत हाज़िर जवाबी:– 'पाकिस्तानी पत्रकार का सवाल'

एक बार जब अटल जी पाकिस्तान की यात्रा पर थे, तो एक महिला पत्रकार ने उन्हें चिढ़ाने के अंदाज़ में पूछा, 'मैं आपसे शादी करने को तैयार हूँ, लेकिन मुँह दिखाई में मुझे 'मुहम्मद अली जिन्ना का बनाया हुआ पाकिस्तान चाहिए।'

अटल जी ने पलक झपकते ही मुस्कुराकर उत्तर

दिया–

‘मैं भी शादी के लिए तैयार हूँ, लेकिन मुझे दहेज़ में पूरा ‘अखंड भारत’ चाहिए।’

उनकी इस हाज़िर जवाबी ने न केवल माहौल को हल्का कर दिया, बल्कि सामने वाले को निरुत्तर भी कर दिया। यह उनकी वाक्पटुता और अटूट राष्ट्रप्रेम का प्रमाण है।

3. उदारता और बड़प्पनः– ‘विपक्ष के प्रति सम्मान’

एक समय था जब संसद में अटल जी और पंडित जवाहरलाल नेहरू के बीच तीखी बहस होती थी। एक बार अटल जी के भाषण से नेहरू जी इतने प्रभावित हुए कि उन्होंने विदेशी मेहमानों से उनका परिचय कराते हुए कहा था, ‘यह युवक एक दिन भारत का प्रधानमंत्री बनेगा।’

सालों बाद जब अटल जी विदेश मंत्री बने, तो उन्होंने देखा कि उनके कार्यालय से नेहरू जी की एक तस्वीर हटा दी गई है। उन्होंने तुरंत आदेश दिया कि वह तस्वीर वापस लगाई जाए। उन्होंने कहा– ‘‘मतभेद अपनी जगह हैं, लेकिन सम्मान और इतिहास अपनी जगह।’’ यह प्रसंग सिखाता है कि वैचारिक मतभेदों के बावजूद मानवीय गरिमा और मर्यादा को कभी नहीं भूलना चाहिए।

4. मानवीय संवेदनाः– ‘‘एक साधारण कार्यकर्ता की चिंता’’

प्रधानमंत्री रहते हुए भी अटल जी अपने पुराने मित्रों और कार्यकर्ताओं को नहीं भूलते थे। एक बार एक पुराना कार्यकर्ता बीमार था। प्रोटोकॉल और सुरक्षा की चिंता किए बिना अटल जी अचानक उसके घर पहुँच गए। कार्यकर्ता की आँखों में आँसू आ गए। अटल जी ने उसका हाथ पकड़कर कहा– ‘‘प्रधानमंत्री बाद में हूँ, पहले तुम्हारा दोस्त हूँ।’’

अटल जी के जीवन से मिलने वाली मुख्य सीखः–

विनम्रताः– पद की गरिमा और सरलता का संतुलन।

धैर्यः– कठिन से कठिन परिस्थिति में भी शांत रहकर निर्णय लेना।

राष्ट्र प्रथमः– दलगत राजनीति से ऊपर उठकर राष्ट्रहित को सर्वोपरि रखना।

नरेन्द्र नाथ पटेल (स. अ.)
कम्पोजिट विद्यालय सुरहन, भदोही

भोलू हाथी और चींटी

भोलू हाथी पड़े बीमार,
पहुंचे डॉक्टर चींटी के द्वार।
बोले मुझको छींक थी आई,
दे दो मुझको मीठी दवाई।

चींटी बोली दूं इंजेक्शन,
हुआ ना हो कहीं कोई इंफेक्शन।
भोलू हाथी डरे बड़े,
दो पैरों पर हुए खड़े।

बोले सुई ना मैं लगवाऊं,
डर के मारे कांपता जाऊं।
डॉक्टर कुछ तो करो उपाय,
घिग्घी मेरी बंधती जाए।

चींटी ने फिर जुगत लगाई,
डंक में अपने दवा लगाई।
दे भोलू में दी चुभाए,
उई उई भोलू बोलत जाएं।

रचना—
पूजा सचान स०अ०
प्राथमिक विद्यालय बसारी गुरसरांय
झांसी

विश्व विकलांग दिवस

शिक्षण संवाद

2025 की थीम– सामाजिक प्रगति को आगे बढ़ाने के लिए विकलांगता–समावेशी समाजों को बढ़ावा देना (**Fostering disability & inclusive societies for advancing social progress**)

भूमिका

किसी भी समाज की असली ताकत उसकी ऊँची इमारतों, चौड़ी सड़कों या नई तकनीक में नहीं, बल्कि इस बात में है कि वह अपने हर सदस्य – चाहे वह किसी भी क्षमता का हो – को कितना सम्मान और समान अवसर देता है। विश्व विकलांग दिवस हमें याद दिलाता है कि विकलांगता किसी व्यक्ति की कमज़ोरी नहीं, बल्कि समाज की सोच, उसकी पहुंच और समावेश की परीक्षा है। जब हम बाधाएँ हटाते हैं, तो हर व्यक्ति चमकता है।

कब और क्यों मनाया जाता है?

हर साल 3 दिसंबर को संयुक्त राष्ट्र द्वारा अंतरराष्ट्रीय विकलांग व्यक्तियों का दिवस (**International Day of Persons with Disabilities — IDPD**) मनाया जाता है। 1992 में **UN General Assembly ds resolution 47/3** से इसकी शुरुआत हुई।

उद्देश्य–

– विकलांग व्यक्तियों के अधिकारों की रक्षा

– शिक्षा, रोजगार, स्वास्थ्य और सामाजिक जीवन में समान भागीदारी

– नकारात्मक रूढ़ियों (**stigma**) को तोड़ना

– समाज को याद दिलाना कि 1.3 अरब से ज्यादा लोग (दुनिया की आबादी का 16 प्रतिशत) किसी न किसी विकलांगता के साथ जी रहे हैं। यह दुनिया का सबसे बड़ा अल्पसंख्यक समूह है।

ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

प्राचीन काल में अक्सर विकलांग व्यक्तियों को दया या बोझ माना जाता था। 1981– संयुक्त राष्ट्र ने विकलांग व्यक्तियों का अंतरराष्ट्रीय वर्ष घोषित किया। 1983–1992– विकलांग व्यक्तियों का संयुक्त राष्ट्र दशक मनाया गया। 2006– **UN Convention on the Rights of Persons with Disabilities (UNCRPD)** अपनाया गया। भारत ने भी 2007 में हस्ताक्षर किए।

3 दिसंबर 1992 से हर साल यह दिवस मनाया जा रहा है। भारत में– **RPwD Act** 2016 – 21 प्रकार की विकलांगताओं को मान्यता, 4 प्रतिशत सरकारी नौकरी आरक्षण, शिक्षा में कोटा, सुगम्य भारत अभियान। दिव्यांग शब्द का प्रयोग बढ़ा (2016 से आधिकारिक रूप से प्रोत्साहित)।

भूगोल से सीख

धरती पर हर जगह एक जैसी नहीं – पहाड़, मैदान, समुद्र, रेगिस्तान – फिर भी हर का अपना योगदान है। उसी तरह हर व्यक्ति की क्षमताएँ अलग हैं, लेकिन मूल्य और अधिकार समान हैं। समाज को रैंप, ब्रेल, साइन लैंग्वेज, ऑडियो–डिस्क्रिप्शन जैसी सुविधाएँ देकर ''सुलभ'' बनाना होगा।

विज्ञान और तकनीक की भूमिका

विज्ञान ने जीवन बदल दिया है–

– ब्रेल लिपि और रिफ्रेशेबल ब्रेल डिस्प्ले
– कोक्लियर इम्प्लांट और आधुनिक श्रवण यंत्र
– प्रोस्थेटिक्स (कृत्रिम अंग) जो **AI** से नियंत्रित होते हैं
– व्हीलचेयर से लेकर एक्सोस्केलेटन तक
– ए आई आधारित ऐप्स – वॉइस असिस्टेंट, इमेज डिस्क्रिप्शन

विज्ञान कहता है – सीमाएँ शरीर की नहीं, सोच और संसाधनों की होती हैं।

गणित की सीख

समाज अगर कुल अवसरों को 100 मान ले, तो विकलांग व्यक्तियों की आबादी (15–16 प्रतिशत) के हिसाब से उन्हें भी उसी अनुपात में शिक्षा, नौकरी और संसाधन मिलने चाहिए। असमानता बढ़ाने से कुल प्रगति घटती है – समानता = संतुलन = सशक्त समाज।

निष्कर्ष

विश्व विकलांग दिवस सिर्फ एक तारीख नहीं – एक सोच है, एक आंदोलन है। जब हम– मजाक की जगह समझदारी अपनाएँ, दया की जगह सम्मान दें, उपेक्षा की जगह अवसर बनाएँ, तब ही सच्चा सशक्त समाज बनेगा।

"विकलांगता शरीर में नहीं, सोच में होती है। और सोच बदली जा सकती है।"

मिहिर यादव स०अ०
कंपोजिट विद्यालय कुकुहाँ
विकास खण्ड–करंजाकलाँ
जनपद–जौनपुर

गणित का जादूगोला

कक्षा 5 के लिए गणित विषय का एक नवाचार – गणित का जादूगोला

इस नवाचार में, छात्रों को एक जादूगोला बनाने के लिए कहा जाता है जिसमें विभिन्न गणितीय संक्रियाएं जैसे कि जोड़, घटाव, गुणा, भाग आदि शामिल हों।

उद्देश्यः–
– छात्रों को गणितीय संक्रियाओं को समझने और उनका अभ्यास करने में मदद करना।
– छात्रों को समस्या–समाधान कौशल विकसित करने में मदद करना।
– छात्रों को गणित को मजेदार और आकर्षक बनाने में मदद करना।

सामग्रीः–
– एक बड़ा कागज या कार्डबोर्ड
– रंगीन पेंसिल या मार्कर
– गोंद या टेप
– स्केल और पेंसिल

निर्देशः—

1. छात्रों को एक जादूगोला बनाने के लिए कहें जिसमें विभिन्न गणितीय संक्रियाएं शामिल हों।

2. छात्रों को जादूगोले के केंद्र में एक संख्या लिखने के लिए कहें।

3. छात्रों को जादूगोले के चारों ओर विभिन्न गणितीय संक्रियाएं लिखने के लिए कहें, जैसे कि 2, –3, 4, 2 आदि।

4. छात्रों को जादूगोले के बाहर एक संख्या लिखने के लिए कहें जो जादूगोले के केंद्र में लिखी संख्या के साथ जुड़कर एक गणितीय समस्या बनाती है।

5. छात्रों को जादूगोले को सजाने और रंगने के लिए कहें।

उदाहरण—

जादूगोले के केंद्र में 12 लिखा है। जादूगोले के चारों ओर 2, –3, 4, 2 लिखे हैं। जादूगोले के बाहर 5 लिखा है। गणितीय समस्या— 12+2 = ? (उत्तरः— 14)

12 – 3 = ? (उत्तरः— 9)

12 गुणा 4 = ? (उत्तरः— 48)

12 ÷ 2 = ? (उत्तरः— 6)

निष्कर्षः—

गणित का जादूगोला एक मजेदार और आकर्षक तरीका है जिससे छात्रों को गणितीय संक्रियाओं को समझने और उनका अभ्यास करने में मदद मिल सकती है। यह नवाचार छात्रों को समस्या—समाधान कौशल विकसित करने में भी मदद करता है।

विनीता सिंह (सहायक अध्यापक)
पी० एम० श्री प्राथमिक विद्यालय धनौरा
सिल्वर नगर न०1
विकास क्षेत्र व जनपद— बागपत

स्मार्ट क्लासरूम

स्मार्ट क्लासरूम आधुनिक शिक्षा प्रणाली का एक क्रांतिकारी रूप है, जो पारंपरिक शिक्षण विधियों को डिजिटल तकनीक के साथ एकीकृत करता है। यह एक ऐसी प्रौद्योगिकी–सक्षम कक्षा है जो ऑडियो, वीडियो, एनिमेशन और इंटरैक्टिव ग्राफिक्स के माध्यम से सीखने के अनुभव को रोचक और प्रभावी बनाती है।

स्मार्ट स्कूल्स स्मार्ट लर्निंग – **Smart Class in Hindi Smart Class Content in Hindi for Schools**

Smart Classroom & Their Importance in Education & Learn at स्मार्ट क्लासरूम के मुख्य घटक–

एक आधुनिक स्मार्ट क्लासरूम में निम्नलिखित तकनीकी उपकरणों का समावेश होता है– इंटरैक्टिव व्हाइटबोर्ड / स्मार्ट बोर्ड। यह एक बड़ा टच–सेंसिटिव बोर्ड होता है जो कंप्यूटर से जुड़ा होता है, जहाँ शिक्षक उंगली या स्मार्ट पेन से लिख सकते हैं।

डिजिटल प्रोजेक्टर– शिक्षण सामग्री को बड़ी स्क्रीन पर प्रदर्शित करने के लिए इसका उपयोग किया जाता है।

लर्निंग मैनेजमेंट सिस्टम (एल.एम.एस.)– यह छात्रों की प्रगति को ट्रैक करने और ई–कंटेंट प्रबंधित करने में मदद करता है।

ऑडियो–विजुअल सिस्टम– बेहतर सुनने के लिए हाई–क्वालिटी स्पीकर्स और माइक का सेटअप।

व्यक्तिगत उपकरण– छात्रों के लिए टैबलेट या लैपटॉप, जिनका उपयोग वे डिजिटल नोट्स

बनाने और ऑनलाइन संसाधनों तक पहुँचने के लिए करते हैं।

प्रमुख लाभ –

दृश्य शिक्षण (**Visual Learning**)– जटिल विषयों को 2डी और 3डी एनिमेशन के माध्यम से आसानी से समझाया जा सकता है, जिससे छात्र लंबे समय तक जानकारी याद रख पाते हैं।

इंटरैक्टिव सहभागिता– छात्र सक्रिय रूप से क्विज और डिजिटल गेम के माध्यम से पाठ में भाग लेते हैं, जिससे कक्षा का वातावरण जीवंत रहता है।

समय की बचत– शिक्षकों को बोर्ड पर चित्र या आरेख बनाने में समय बर्बाद नहीं करना पड़ता, वे पहले से तैयार डिजिटल स्लाइड का उपयोग कर सकते हैं।

लचीली शिक्षा– **ClassVR** जैसे उपकरण शिक्षकों को प्रत्येक छात्र की सीखने की गति के अनुसार शिक्षण शैली को बदलने की सुविधा देते हैं।

चुनौतियाँ और भविष्य–

भारत में स्मार्ट क्लासरूम के विस्तार में कुछ बाधाएँ भी हैं, जैसे उच्च स्थापना लागत, तकनीकी खराबी के लिए विशेषज्ञों की कमी और डिजिटल विभाजन। हालांकि, **PM eVIDYA** जैसे सरकारी कार्यक्रमों के माध्यम से शिक्षा के डिजिटलीकरण को तेजी से बढ़ावा दिया जा रहा है। भविष्य में, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (ए.आई.) और आभासी वास्तविकता (वी.आर) जैसी तकनीकें स्मार्ट क्लासरूम को और भी अधिक व्यक्तिगत और इमर्सिव (**Immersive**) बनाएंगी।

जितेन्द्र कुमार (स०अ०)
पी० एम० श्री प्रा० वि० धनौरा सिल्वर नगर– 1
विकास क्षेत्र व जनपद– बागपत

बालिकाओं के सपनों का सुरक्षित आश्रय

उत्तर प्रदेश में उच्चीकृत कस्तूरबा गांधी आवासीय बालिका विद्यालय

आज जब देश नारी सशक्तिकरण और शिक्षा के समान अधिकार की बात करता है, तब उत्तर प्रदेश के ग्रामीण और वंचित क्षेत्रों में संचालित कस्तूरबा गांधी आवासीय बालिका विद्यालय इस विचार को धरातल पर साकार करते नज़र आते हैं। विशेष रूप से उच्चीकृत कस्तूरबा गांधी विद्यालय, जहाँ बालिकाएँ कक्षा 6 से लेकर 12 तक शिक्षा प्राप्त कर रही हैं, सामाजिक परिवर्तन की एक मजबूत नींव बनते जा रहे हैं।

शिक्षा से सशक्तिकरण तक की यात्रा

कस्तूरबा गांधी आवासीय बालिका विद्यालयों की परिकल्पना उन बालिकाओं के लिए की गई थी, जो गरीबी, सामाजिक रूढ़ियों या पारिवारिक परिस्थितियों के कारण शिक्षा से दूर रह गई थीं। अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति, पिछड़ा वर्ग, अल्पसंख्यक एवं आर्थिक रूप से कमजोर परिवारों की बालिकाओं के लिए यह विद्यालय निःशुल्क, सुरक्षित और गुणवत्तापूर्ण शिक्षा का माध्यम बने हैं।

उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा इन विद्यालयों को उच्चीकृत कर माध्यमिक और उच्च माध्यमिक स्तर तक विस्तारित किया जाना एक ऐतिहासिक कदम है, जिससे बालिकाओं का विद्यालय छोड़ने का प्रतिशत लगातार कम हो रहा है।

शैक्षणिक वातावरण और आधुनिक संरचना

उच्चीकृत कस्तूरबा गांधी विद्यालयों में शिक्षा केवल पाठ्यपुस्तकों तक सीमित नहीं है। यहाँ प्रशिक्षित शिक्षक–शिक्षिकाओं द्वारा हिंदी माध्यम में राज्य पाठ्यक्रम के अनुसार शिक्षण कराया जाता है। विज्ञान, गणित, सामाजिक विज्ञान, भाषा विषयों के साथ–साथ उच्च कक्षाओं में कला एवं विज्ञान वर्ग की पढ़ाई की सुविधा भी उपलब्ध कराई जा रही है।

कई विद्यालयों में स्मार्ट क्लास, कंप्यूटर शिक्षा, पुस्तकालय एवं प्रयोगशालाओं की व्यवस्था की गई है, जिससे छात्राएँ आधुनिक तकनीक से भी परिचित हो सकें।

आवासीय सुविधा– सुरक्षा और संवेदनशीलता का संगम

कस्तूरबा गांधी विद्यालय पूर्णतः आवासीय होते हैं, जहाँ बालिकाओं को घर जैसा सुरक्षित वातावरण मिलता है। स्वच्छ छात्रावास, पौष्टिक भोजन, पेयजल, बिजली, स्वच्छ शौचालय और स्नानघर जैसी मूलभूत सुविधाएँ सुनिश्चित की जाती

हैं। सुरक्षा की दृष्टि से महिला वार्डन, सीसीटीवी कैमरे और चारदीवारी की व्यवस्था विद्यालय परिसरों में की जाती है।

यह आवासीय व्यवस्था उन अभिभावकों के लिए भी विश्वास का आधार बनती है, जो बेटियों की सुरक्षा को लेकर आशंकित रहते हैं।

सह–शैक्षणिक गतिविधियाँ और व्यक्तित्व विकास

इन विद्यालयों में शिक्षा के साथ–साथ योग, खेल–कूद, सांस्कृतिक कार्यक्रम, चित्रकला, नाटक और संगीत जैसी गतिविधियों को भी महत्व दिया जाता है। बालिकाओं में आत्मविश्वास, नेतृत्व क्षमता और सामाजिक चेतना विकसित करने के लिए समय–समय पर जागरूकता कार्यक्रम, स्वास्थ्य शिविर और जीवन कौशल प्रशिक्षण आयोजित किए जाते हैं।

प्रवेश व्यवस्था अवसर सभी के लिए

कस्तूरबा गांधी आवासीय बालिका विद्यालयों में प्रवेश प्रक्रिया सरल और पारदर्शी है। प्रवेश पूरी तरह निःशुल्क होता है और किसी प्रकार की लिखित परीक्षा नहीं ली जाती। प्राथमिकता उन बालिकाओं को दी जाती है जो विद्यालय छोड़ चुकी हों या कभी विद्यालय न गई हों। आवश्यक दस्तावेजों के आधार पर चयन किया जाता है, जिससे वास्तव में जरूरतमंद बालिकाओं तक योजना का लाभ पहुँच सके।

सामाजिक परिवर्तन की दिशा में मजबूत कदम

उच्चीकृत कस्तूरबा गांधी आवासीय बालिका विद्यालय आज केवल शिक्षण संस्थान नहीं, बल्कि सामाजिक बदलाव के केंद्र बनते जा रहे हैं। यहाँ से निकलने वाली बालिकाएँ आत्मनिर्भर बनकर समाज में अपनी पहचान बना रही हैं। ग्रामीण क्षेत्रों की बेटियाँ अब डॉक्टर, शिक्षक, अधिकारी बनने का सपना देखने लगी हैं।

निष्कर्ष

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि उत्तर प्रदेश में उच्चीकृत कस्तूरबा गांधी आवासीय बालिका विद्यालय बालिका शिक्षा के क्षेत्र में एक प्रेरणादायक मॉडल हैं। यह विद्यालय शिक्षा, सुरक्षा और संवेदनशीलता का ऐसा समन्वय प्रस्तुत करते हैं, जो आने वाली पीढ़ियों के लिए मार्गदर्शक सिद्ध होगा। यदि इन विद्यालयों को निरंतर संसाधन, प्रशिक्षण और निगरानी मिलती रहे, तो यह योजना बालिकाओं के उज्ज्वल भविष्य की गारंटी बन सकती है।

अमन्त कुमार
(जिला समन्वयक, बालिका शिक्षा)
जनपद – हमीरपुर

कलारीपयट्टू (Kalaripayattu)

कलारीपयट्टू (**Kalaripayattu**) दुनिया की सबसे पुरानी और प्रभावशाली मार्शल आर्ट प्रणालियों में से एक है, जिसकी उत्पत्ति भारत के केरल राज्य में हुई थी। इसे अक्सर ''सभी मार्शल आर्ट्स की जननी'' कहा जाता है।

इतिहास और उत्पत्ति–

प्राचीन जड़ें– इसकी उत्पत्ति लगभग 3,000 साल पहले मानी जाती है। पौराणिक कथाओं के अनुसार, भगवान विष्णु के छठे अवतार परशुराम को इस विद्या का संस्थापक माना जाता है, जिन्होंने केरल की रक्षा के लिए इसे स्थानीय लोगों को सिखाया था।

सांस्कृतिक महत्व–

यह केवल युद्ध कला नहीं है, बल्कि केरल की पहचान का हिस्सा है। केरल पर्यटन के अनुसार, इसने कथकली जैसे पारंपरिक नृत्यों को भी प्रभावित किया है।

प्रशिक्षण के चार मुख्य चरण

कलारीपयट्टू का प्रशिक्षण ''कलारी'' (प्रशिक्षण केंद्र) में दिया जाता है और इसे चार चरणों में विभाजित किया गया है।

मेइथारी (**Meithari**)– इसमें शरीर के नियंत्रण, लचीलेपन और संतुलन पर ध्यान दिया जाता है।

कोल्थारी (**Kolthari**)– इस चरण में लकड़ी के हथियारों जैसे लंबी और छोटी छड़ियों का उपयोग सिखाया जाता है।

अंकथारी (**Ankathari**)– इसमें धातु के हथियारों जैसे तलवार, ढाल और भाले का उपयोग करना सिखाया जाता है।

वेरुमकाई (**Verumkai**)– यह निहत्थे युद्ध की तकनीक है, जिसमें केवल हाथों और पैरों का

उपयोग करके आत्मरक्षा सीखी जाती है।

विशेषताएं और तकनीक–

पशुओं की मुद्राएं– इसकी तकनीकें शेर, हाथी, सांप और बाघ जैसे जंगली जानवरों की गतिविधियों और उनकी रक्षात्मक प्रवृत्तियों पर आधारित होती हैं।

मर्म चिकित्सा– कलारीपयट्टू में मानव शरीर के 107 ''मर्म'' (महत्वपूर्ण ऊर्जा बिंदु) का ज्ञान दिया जाता है, जिसका उपयोग हमले और उपचार (आयुर्वेद के माध्यम से) दोनों के लिए किया जा सकता है।

हथियार– इसमें ''उरुमी'' (लचीली तलवार) जैसे खतरनाक हथियारों का भी उपयोग होता है।

लाभ–

– यह शरीर में लचीलापन, गति और सहनशक्ति बढ़ाता है।

– एकाग्रता और मानसिक शांति के लिए इसमें ध्यान (**meditation**) का अभ्यास भी कराया जाता है।

ब्रिटिश शासन के दौरान इस पर प्रतिबंध लगा दिया गया था, लेकिन आधुनिक समय में यह दुनिया भर में फिर से लोकप्रिय हो रहा है।

ज्योति सागर (सहायक अध्यापक)
प्राथमिक विद्यालय फतेहपुर पुट्ठी– 3
विकास क्षेत्र व जनपद– बागपत

गरुड़ासन

आओ बच्चों गरुड़ासन सीखे,
सबसे पहले सीधे खड़े हो जाएं,
घुटने मोड़ें, पैर में पैर लपेटे,
हाथ जोड़े, ध्यान लगाएं,
गरुड़ जैसे हम बन जाएं।

गरुड़ासन योग का एक महत्वपूर्ण संतुलन आसन है। इसमें हम गरुड़ (ईगल) की तरह खड़े होते हैं। यहां आसन हमें संतुलन और ध्यान सिखाता है।

गरुड़ासन करने की विधि–

सीधे खड़े होकर घुटनों को थोड़ा मोड़ें। बाएं पैर को दाएं पैर के ऊपर से लपेटे और बाएं पैर की उंगलियां दाएं पैर की पिंडली के पीछे लाएं। दाएं हाथ को बाएं हाथ के ऊपर रखते हुए कोहनियों को 90 डिग्री मोड़ें और हथेलियां को आपस में जोड़े। शरीर को सीधा रखें और 30 – 60 सेकंड तक संतुलन बनाए रखे। सामान्य श्वांस लें। धीरे–धीरे वापस आएं और दूसरी ओर से दोहराएं।

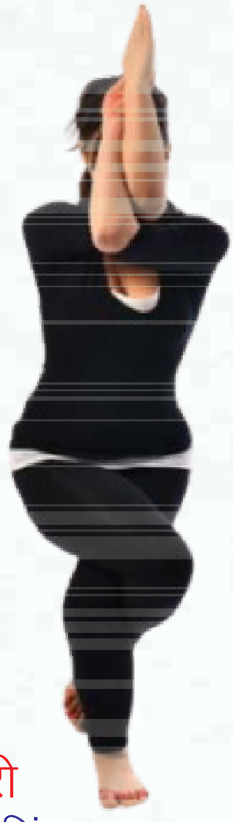

गरुड़ासन के लाभः–

- हाथ ,पैर और जांघों की मांसपेशियों में मजबूती लाता है।
- साइटिका एवं आमवात (गठिया) जैसे रोगों में लाभदायक है।
- गुदा –मलाशय– मूत्राशय विकारों में गुणकारी है।
- जोड़ों में सक्रियता (लचीलापन) बढ़ता है।
- मानसिक संतुलन और एकाग्रता में सुधार करता है।

सावधानियां–

- घुटने, टखने या कंधे में गंभीर चोट या दर्द होने पर यह आसान न करें।
- शुरुआत में संतुलन के लिए दीवार का सहारा लिया जा सकता है।
- शुरुआत में योग प्रशिक्षक की देखरेख में ही इसका अभ्यास करें।
- स्वयं को बदलें तो यह जग बदलेगा।
- योग से सुखमय, हर दिन निकलेगा।

गुप्ता राजेश्वरी
प्राथमिक विद्यालय जयसिंहगढ़
बाबा बेलखरनाथधाम– प्रतापगढ़

मिशन शिक्षण संवाद

डिस्क्लेमरः— मिशन शिक्षण संवाद की मासिक पत्रिका शिक्षण संवाद बेसिक शिक्षा के शिक्षकों का आपसी सीखने—सिखाने का स्वैच्छिक और स्वयंसेवी साझा प्रयास है। इस पत्रिका में अनमोल रत्न शिक्षकों के विवरण, शिक्षकों के लेखों, बाल कविताओं, बाल कहानियों से लेकर महापुरुषों के विचार, अधिकारीगण के लेख और सामान्य ज्ञान के प्रश्न भी सम्मिलित हैं। इस पत्रिका में प्रकाशित किसी भी लेख, कविता की मौलिकता और तथ्यात्मकता के लिए सम्बंधित स्तम्भकार उत्तरदायी होगा। यद्यपि पत्रिका में प्रकाशित सभी स्तम्भों में उच्चकोटि की गुणवत्ता का ध्यान रखा गया है तथापि किसी भी तथ्य के लिए संपादक मंडल दावा नहीं करता है। किसी भी सुझाव या शिकायत के लिए मिशन के ईमेल **shikshansamvad@gmail.com** या व्हाट्सएप्प नम्बर—**9458278429** पर सम्पर्क कर सकते हैं।

1. फेसबुक पेजः http://m.facebook.com/shikshansamvad/
2. फेसबुक समूहः http://www.facebbook.com/groups/118010865464649
3. मिशन शिक्षण संवाद ब्लॉगः https://www.shikshansamvad.blogspot.in
4. Twitter@shikshansamvad): https://twitter.com/shikshansamvad
5. यू—टयूबः https://www.youtube.com/channel/UCPbbM119CQuxLymELvGgPig
6. व्हाट्सएप नं0 : **9458278429**
7. ई मेलः shikshansamvad@gmail.com
8. वेबसाइटः www.missionshikshansamvad.com

विमल कुमार
टीम मिशन शिक्षण संवाद